International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-07-2020; Accepted: 10-08-2020; Published: 26-08-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 137-138

भारत में कामकाजी गृहणियों (महिला) की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमिः एक विश्लेषण

मंजु कुमारी
शोध छात्रा, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध, गया, बिहार, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध आलेख 'भारत में कामकाजी गृहणियों की सामाजिक पृष्ठभूमि' पर आधारित है। कामकाजी गृहणियों से हमारा तात्पर्य विवाहित और अविवाहित महिलाओं से है। इस अध्ययन से यह पता चलता है कि ये कामकाजी महिलाएँ (विवाहित एवं अविवाहित) किस सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश में काम करती हैं तथा अपनी आजीविका अर्जित करती हैं। इनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति किस प्रकार की है तथा ये किस प्रकार की सामाजिक एवं पारिवारिक भूमिका निभा रही है।

मूल शब्दः कामकाजी, गृहणी, परिवेश, व्यवसाय, आजीविका

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का मूल केन्द्र विन्दु कामकाजी गृहणियाँ (महिला) हैं। इस पितृसत्ता समाज में महिलाओं को दूसरे दर्जे का स्थान प्राप्त है। दूसरी ओर यह भी देखना नितांत आवश्यक है कि इन महिलाओं के बगैर पुरुष का कोई भी अस्तित्व नहीं है। यहाँ तक कि हर पुरुष के उन्नति के पीछे महिलाओं का हाथ होता है। इन महिलाओं का विश्लेषण लिंग के आधार पर करना कोई मायने नहीं रखता है क्योंकि ये सभी महिलाएँ हैं। पुरुष को कभी भी कामकाजी महिला की उपाधि से विभूषित नहीं किया जा सकता है। अतः इन महिलाओं की आयु पर प्रकाश डालने के लिए प्रश्न का सहारा लिया गया है।1

तालिका 1: उम्र के आधार पर गृहणियाँ

उम्र	सख्या	प्रतिशत
20 वर्ष से कम	56	18.6
20 वर्ष से 30 वर्ष	61	20.3
31 वर्ष से 40 वर्ष	70	23.3
40 वर्ष से अधिक	113	37.7
योग	300	100.00

तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि प्रायः सभी उम्र की महिलाएँ वर्त्तमान समाज में काम कर रही हैं एवं अपनी आजीविका अर्जित कर रही हैं जिससे वह पारिवारिक आय में वृद्धि कर पाने में सक्षम साबित हो रही हैं। 20 वर्ष से कम आयु की महिलाएँ भी काम करती हैं। उसी प्रकार 40 वर्ष से भी अधिक आयु की महिलाएँ काम करती हैं और अपनी आजीविका के साथ–साथ परिवार के सदस्यों के लिए अर्थोपार्जन में लगी हैं। परम्परागत समाज में 20 वर्ष से कम आयु की महिलाओं को काम करते हुए कम ही सुनी गयी है। इतना अवश्य है कि इस आयु की महिलाएँ घरेलू कार्यों में अपना हाथ अवश्य ही बटाती है। लेकिन वर्त्तमान समय में इस आयु की भी महिला काम करके पारिवारिक आय में सहयोग दे रही है। साथ ही वह पारिवारिक परम्परागत धारणाओं में महत्वपूर्ण परिवर्त्तन ला रही हैं। इस दृष्टि से इन नवयुवती कामकाजी महिलाओं की भूमिका परिवार एवं समाज में काफी महत्त्वपूर्ण हो गया है। उसी कड़ी में वृद्ध महिलाओं की भूमिका को कम करके नहीं आँका जा सकता है। नवयुवतियाँ एवं वृद्धाएँ काम कर रही हैं, जो इस तथ्य पर प्रकाश डालती है कि विवाहित महिलाएँ भी काम करती होगी एवं अविवाहित महिलाएँ भी काम करती होगी। इन कामकाजी महिलाओं की वैवाहिक स्थिति किस प्रकार की है, इस पर एक प्रश्न के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।2

तालिका 2: वैवाहिक स्थिति एवं गृहणियों के आधार पर

वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
विवाहित	200	66.6
अविवाहित	100	33.3
योग	300	100.00

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विवाहित महिलाएँ भी काम करती हैं एवं अविवाहित महिलाएँ भी काम करती हैं इस क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं में 66.6 प्रतिशत विवाहित हैं एवं 33.3 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ अविवाहित हैं। विवाहित महिलाएँ जिस सामाजिक परिवेश एवं पारिवारिक परिवेश से प्रभावित होकर काम करती हैं प्रायः वैसी ही सामाजिक परिवेश एवं पारिवारिक परिवेश अविवाहित कामकाजी महिलाओं की नहीं होती है। यहाँ पर विवाहित कामकाजी महिलाओं की तथा अविवाहित कामकाजी महिलाओं की अनुपात 1 : 1 है। यह एक विचित्र सामाजिक परिवेश है कि जितनी संख्या में विवाहित महिलाएँ काम कर रही हैं, प्रायः उतनी ही संख्या में अविवाहित महिलाएँ भी काम कर रही हैं। इस प्रकार विवाहित कामकाजी महिलाओं की भूमिका एवं अविवाहित कामकाजी महिलाओं की भूमिका को स्पष्ट जानकारी उपलब्ध होती है।

परम्परागत समाज में खासतौर से अशिक्षित महिलाएँ श्रमिक के रूप में काम करती थीं। लेकिन इसका व्यापक असर आधुनिक परिवेश पर भी पड़ा। अब शिक्षित महिलाएँ भी उतनी काम करने के लिए इच्छुक है जितनी की परम्परागत समाज में अशिक्षित महिलाएँ बाध्य होती थी। इस आलेख में शिक्षा के स्तर को एक स्वतंत्र चर के रूप में चयन किया गया है। महिलाओं के शिक्षा के स्तर को दो भाग में विभक्त कर देखा जा सकता है। अशिक्षित महिला वे हैं जिनके तीन आर. एस. का पूर्ण ज्ञान नहीं है। शिक्षित महिला वे जो पढ़ी–लिखी हैं तथा उच्च प्रशिक्षित महिलाओं को भी इसी वर्ग में सम्मिलित कर लिया गया है। इसलिए कामकाजी महिलाओं को दो भाग में विभक्त किया गया

है–शिक्षित कामकाजी महिलाएँ एवं अशिक्षित कामकाजी महिलाएँ। सवाल यह है कि आखिर कामकाजी महिलाओं की शैक्षणिक स्तर पर वर्गीकृत कैसे किया जाय? इन सवालों की परताल के लिए इसे तालिका के माध्यम से विश्लेषित किया गया है।3

तालिका 3

शैक्षणिक स्तर	संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	73	24.3
साक्षर	157	52.3
शिक्षित	70	23.3
योग	300	100.00

उपरोक्त तालिका–3 से स्पष्ट है कि हर तरह की महिलाएँ काम करके अपनी आजीविका अर्जित कर रही हैं। अधिकांश शिक्षित महिलाओं में यह आम धारणा पायी जा रही है कि वे शिक्षा ग्रहण करें एवं शिक्षोपरान्त काम करें ताकि आर्थिक परतंत्रता से अपने आपको सुरक्षित रख सकें। 24.3 प्रतिशत अशिक्षित महिलाएँ काम कर रही हैं एवं अपनी आजीविका अर्जित कर रही हैं। साक्षर महिलाएँ 52.3 प्रतिशत हैं एवं शिक्षित महिलाएँ 23.3 प्रतिशत हैं।

तालिका 4: व्यवसाय एवं गृहणियाँ (महिलाएँ)

व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
श्रमिक	79	26.3
नौकरी	170	56.6
स्वतंत्र व्यवसाय	51	17.00
योग	300	100

शिक्षित महिलाओं को किस प्रकार की काम मिलती है प्रायः उस प्रकार के व्यवसाय में अशिक्षित महिलाओं को नियुक्ति नहीं हो सकती है। अशिक्षित महिलाओं की व्यवसाय में तथा शिक्षित महिलाओं की व्यवसाय के स्वरूप में परिवर्त्तन पायी जानी स्वाभाविक बात है। अतः एक प्रश्न के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि ये कामकाजी महिलाएँ किस प्रकार के व्यवसाय में लगी है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिलाएँ नौकरी भी करती हैं एवं नौकरी को ही व्यवसाय के रूप में चयन करने के लिए अधिक इच्छुक होती है। नौकरी में भी सरकारी नौकरी को ही वे प्राथमिकता प्रदान करती है। गैर–सरकारी नौकरी को वे अधिक महत्त्व नहीं देती हैं। 56.6 प्रतिशत महिलाएँ नौकरी कर रही है एवं अपनी आजीविका अर्जित कर रही है। 17.00 प्रतिशत महिलाएँ स्वतंत्र व्यवसाय में लगी हैं। इसमें महिलाएँ डॉक्टरी की उपाधि प्राप्त करने के बाद निजी क्लिनिक खोल कर चिकित्सीय सेवा कर रही है।4

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अक्सर महिलाएँ इसी तरह की व्यवसाय में लगी हैं। जिस तरह की उनकी शैक्षणिक योग्यता एवं कार्य क्षमता होती है। खासकर अशिक्षित महिलाएँ श्रमिक के रूप में काम करती हैं एवं अपनी आजीविका अर्जित करती हैं। शिक्षित एवं साक्षर महिलाएँ प्रायः आजीविका के लिए नौकरी को ही व्यवसाय के रूप में चयन करती हैं।

तालिका 5: वार्षिक आय एवं गृहणियाँ

वार्षिक आय	संख्या	प्रतिशत
6000 से कम	64	21.3
6000 से 12000 तक	196	65.3
12000 से अधिक	40	13.3
योग	300	100.00

तलिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश महिलाएँ मध्यम आय स्तर की है, क्योंकि उनकी वार्षिक आय 6000 से 12000 तक ही सीमित है। इससे ऐसा लगता है कि 500 रूपया से 1000 तक मासिक आय अर्जित करती है। ऐसी भी कामकाजी महिलाएँ हैं जो प्रतिशत 500 से कम आय अर्जित करती है। अतः ये महिलाएँ न्यून स्तर आय की है। इनके समक्ष आर्थिक परेशानियाँ अधिक पायी जाती है। जबकि 13.3 प्रतिशत महिलाएँ उच्च स्तर की हैं क्योंकि उनकी वार्षिक आय 12000 से अधिक है। इस तरह स्पष्ट होता है कि ये महिलाएँ प्रायः 1000 रूपये से अधिक मासिक आय अर्जित करती होगी। स्वाभाविक है कि एक कामकाजी महिला जिसकी वार्षिक आय 12000 से अधिक है उनकी दृष्टिकोण में तथा एक कामकाजी महिला जिसकी वार्षिक आय 6000 से कम है उनकी दृष्टिकोण में भिन्नता पायी जाती होगी। इस तरह सभी महिलाओं की दृष्टिकोण एवं अभिव्यक्तियों की जानकारी मिलती है।5

तलिका 6: विवाहित गृहणियों की पति अथवा पिता की शैक्षणिक ोग्यता

शैक्षणिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
थ्ववाहित / अशिक्षित	97	48.5
शिक्षित	103	51.5
योग	200	100.00

उपरोक्त तालिका में शिक्षित और अशिक्षित कामकाजी महिलाओं की चर्चा की गई है। साथ ही इसमें यह भी जानने की कोशिश की गई है कि शिक्षित पति की पत्नियाँ काम के प्रति कहाँ तक जागरूक हैं? इसकी तुलना में अशिक्षित महिलाओं का रूझान काम के प्रति कितना है इसे भी देखा गया है। तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि वर्त्तमान समय अशिक्षित एवं शिक्षित पति दोनों ही अपनी पत्नी से अपेक्षा करते हैं कि उनकी पत्नी काम करे एवं आजीविका के लिए धन अर्जन करे। अशिक्षित पति भी अपनी पत्नी को काम करने की अनुमति प्रदान करते हैं तभी तो 48.5 प्रतिशत विवाहित कामकाजी महिलाएँ स्वीकार करती हैं कि उनके पति शिक्षित नहीं हैं। उसी तरह शिक्षित पति को भी कामकाजी पत्नी पर कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि विवाहित कामकाजी महिलाओं में 51.5 प्रतिशत महिलाएँ स्वीकार करती हे कि उनके पति शिक्षित हैं। इसी तरह की परिवेश अविवाहित कामकाजी महिलाओं के बारे में भी स्पष्ट होती है। 27.00 प्रतिशत अविवाहित कामकाजी महिलाएँ स्वीकार करती हैं कि उनके अभिभावक या पिता अशिक्षित हैं। उसी प्रकार 73.0 प्रतिशत अविवाहित कामकाजी महिलाएँ स्वीकार करती हैं कि उनके अभिभावक या पिता शिक्षित हैं। इस तरह यह स्पष्ट है कि शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावक या पिता दोनों ही कामकाजी महिलाओं को महत्त्व देते हैं।6

तालिका 7: पति एवं पिता के शैक्षणिक योग्यता एवं गृहणियाँ

पिता/पति के शैक्षणिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित महिलाएँ / अशिक्षित	43	57.3
शिक्षित	32	42.3
योग	75	100.00

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अशिक्षित महिलाओं के पति या पिता अशिक्षित भी हैं तो भी वे उनके काम करने पर आपत्ति नहीं करते हैं। अधिकांश अशिक्षित पति भी अपने पुत्री या पत्नी से काम करवा रहे हैं। उसी प्रकार शिक्षित महिलाओं के अशिक्षित पति या पिता एवं शिक्षित महिलाओं के शिक्षित पति या पिता को कोई आपत्ति नहीं हो रही है कि ये महिलाएँ काम करें। इस तरह

यह स्पष्ट है कि शिक्षित तथा अशिक्षित सभी तरह के परिवार की महिलाएँ काम कर आजीविका अर्जित कर रही हैं।

तलिका 8: पति एवं पिता के शैक्षणिक योग्यता एवं गृहणियाँ

पिता/पति के शैक्षणिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
शिक्षित अविवाहित महिलाएँ / अशिक्षित	25	11.1
शिक्षित	200	88.8
योग	225	100.00

इन कामकाजी महिलाओं के पति अथवा पिता के व्यवसाय पर भी प्रकाश डाला गया है। अधिकांश विवाहित कामकाजी महिलाओं के पति भी नौकरी के व्यवसाय में लगे हुए हैं। 88.8 प्रतिशत विवाहित महिलाओं ने स्वीकार किया है कि उनके पति भी नौकरी करते हैं। केवल 11.1 प्रतिशत अविवाहित कामकाजी महिलाओं के पति नौकरी करते हैं। जबकि कुछ ही विवाहित कामकाजी महिलाओं ने स्वीकार किया है कि उनके पति स्वतंत्र पेशा वाले व्यवसाय से अपनी आजीविक अर्जित करते हैं।

तालिका 9: पति अथवा पत्नी के व्यवसाय एवं गृहणियाँ

पति अथवा पत्नी के व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
विवाहित महिलाओं के पति का व्यवसाय/नौकरी/ पेशा	131	65.5
स्वतंत्र पेशा	69	34.5
योग	200	100.00

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश विवाहित कामकाजी महिलाओं के पति भी नौकरी के पेशा में ही लगे हुए हैं। 65.5 प्रतिशत विवाहित महिलाओं ने यह स्वीकार किया है कि उनके पति भी नौकरी करते हैं। केवल 34.5 प्रतिशत अविवाहित कामकाजी महिलाओं ने स्वीकार किया है कि उनके पति स्वतंत्र पेशा वाले व्यवसाय से अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। अविवाहित कामकाजी महिलाओं में भी 67.00 प्रतिशत महिलाओं के पति नौकरी करते हैं।

तालिका 10: पिता अथवा पति के व्यवसाय एवं गृहणियाँ

पिता अथवा पति के व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
अविवाहित महिलाओं के पिता के व्यवसाय / नौकरी / पेशा	67	67.00
स्वतंत्र पेशा	33	33.00
योग	100	100.00

उपरोक्त तालिका में केवल 33.00 प्रतिशत अविवाहित कामकाजी महिलाओं के पिता या अभिभावक स्वतंत्र प्रकार के व्यवसाय करते हैं। इस तरह स्पष्ट है कि नौकरी पेशा वाले पिता या अभिभावक ही अधिक संख्या में अपने पत्नी को कामकाजी बनाना चाहते हैं। इस तरह स्पष्ट है कि नौकरी पेशा वाले परिवारों की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय रहा है। इसलिए इन परिवारों के महिलाएँ काम करती हैं एवं अपनी आजीविका अर्जित करते हैं।7

तालिका 11: काम करने की अवधि एवं गृहणियाँ

काम करने की अवधि	संख्या	प्रतिशत
5 वर्ष से	52	17.6
5 वर्ष से 10 वर्ष तक	160	53.3
10 वर्ष से अधिक	88	29.3
योग	300	100

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश कामकाजी महिलाएँ आज 10 वर्ष से ही काम कर रही हैं। 53.3 प्रतिशत कामकाजी महिलाएँ ने स्वीकार किया है कि 5 से 10 वर्षों के बीच की अवधि से काम कर रही हैं। 17.3 प्रतिशत महिलाओं को केवल 5 वर्ष ही व्यतीत हो रहे हैं काम करते हुए 29.3 प्रतिशत महिलाएँ आज 10 वर्ष से अधिक समय से काम कर रही हैं। इस तरह यह स्पष्ट है कि वर्त्तमान समय से ही जब सामाजिक परिवेश एवं पारिवारिक वातावरण में परिवर्त्तन होनी शुरू हुई है तभी से अधिकांश महिलाएँ काम करनी शुरू की है एवं आजीविका अर्जित कर रही हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार इस आलेख में भारत के कामकाजी महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर वर्णित किया गया है। वर्त्तमान समय में महत्त्वपूर्ण सामाजिक परिवर्त्तन हो रहा है जिसका प्रभाव प्रत्येक परिवार पर हो रहा है। प्रत्येक परिवार का दृष्टिकोण एवं परम्परागत अवधारणाओं में परिवर्त्तन हो रही है। इस परिवर्त्तन से लोगों की धार्मिक विश्वास में भी परिवर्त्तन हो रहे हैं। धर्म में जो अंधविश्वास के तत्त्व पाये जाते थे वे धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है। इन कामकाजी महिलाओं के धार्मिक विश्वास पर एक प्रश्न के माध्यम से प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ सूची

1. अल्टेकर, ए. एस.: 'दी पॉजिशन ऑफ वोमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, 1959
2. कपूर, प्रमिलाः ''मैरेज एण्ड दी वर्किंग वोमेन इन इंडिया'', विकास प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970.
3. कपूर, प्रमिला : दी चेन्जिंग स्टेट्स ऑफ दी वर्किंग वोमेन इन इंडिया'', विकास प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974.
4. पूर्वोक्त
5. जौहरी, प्रेमाः स्टेट्स ऑफ वर्किंग वोमन, पी. एच. डी. थिसिस युनिवर्सिटी ऑफ लखनऊ, अकरिंग प्रमीला कपूर बुक, दी चेन्जिंग स्टेट्स ऑफ वर्किंग वोमेन इन इंडिया, 1970.
6. उषा राव, एन. जेः वोमेन इन डेभलपिंग सोसाइटी'', आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985.
7. घोष, एस. केः वोमेन इन ए चेन्जिंग सोसाइटी, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1984.